आर. एन. आई – राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या – श्रीगंगानगर/105/2015–2017

मासिक पत्रिका

अजायब ✲ बानी

वर्ष : पंद्रहवां | अंक : दूसरा | जून – 2017

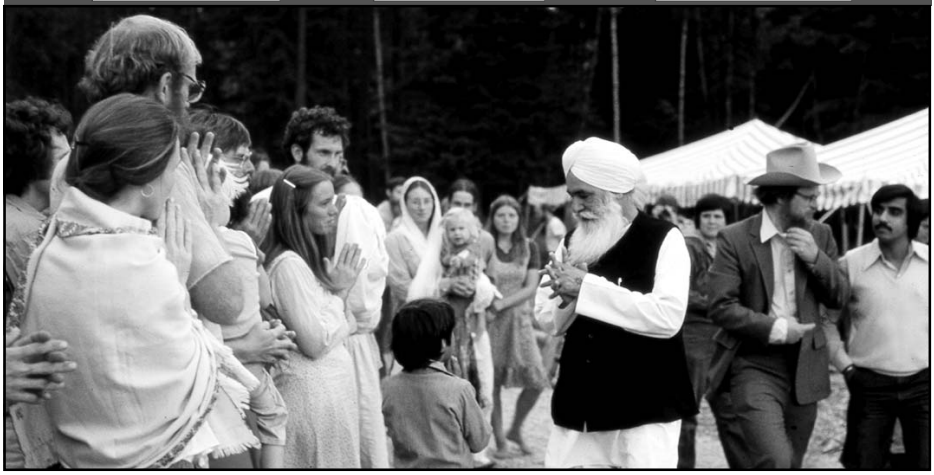

4 तेरी कुदरत तू ही जाणें (शब्द)

5 काल की नगरी (सतसंग)

27 सच आखिर सच होता है

31 सवाल–जवाब

34 धन्य अजायब

संपादक-प्रेम प्रकाश छाबड़ा
99 50 55 66 71 (राजस्थान)
98 71 50 19 99 (दिल्ली)

विशेष सलाहकार-गुरमेल सिंह नौरिया
96 67 23 33 04
99 28 92 53 04

उप संपादक-नन्दनी

सहयोग-परमजीत सिंह

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने नेशनल प्रिन्टर्स,नारायणा, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर – 335 039 जिला – श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

e-mail : dhanajaibs@gmail.com | Website : www.ajaibbani.org

प्रकाशन दिनांक 1 जून 2017 –183– मूल्य – पाँच रुपये

तेरी कुदरत तूं ही जाणे

तेरी कुदरत तूं ही जाणे, होर ना दूजा जाणेगा,
जिस ते मेहर हो जाऐ तेरी, तैनूं ओही पछाणेगा, *(2)*

1. *युग–युग दे विच आऐ पहलां, नाम कबीर सदाया ऐ,*
कर्मकांड तों ठा के दुनियां, परमार्थ विच लाया ऐ, *(2)*
दुःख तसीहे झल्ले सारे (2), दस्सया भेद ठिकाणे दा,
जिस ते मेहर .....

2. *नानक बण के दुनियां तारी, अंगद नाम धराया है,*
अमरदेव गुरु रामदास जी, अर्जुनदेव सदाया है, *(2)*
गुरु अर्जुन जी लोह ते बैठे (2), शुकर मनाया भांणे दा,
जिस ते मेहर .....

3. *हरगोविंद हरिराय साहेब जी, हरि कृष्ण जी प्यारे नें,*
सतगुरु तेग बहादुर साहेब, शीश धर्म तों वारे नें, *(2)*
गुरु गोबिंद सिंह रत्नाकर राव ते (2), कीता मांण निमाणे दा,
जिस ते मेहर .....

4. *तुलसी साहब नाम दे रसिऐ, स्वामी जी नूं तार दित्ता,*
स्वामी जी ने जयमल सिंह नूं, नाम दे बेड़े चाड़ दित्ता, *(2)*
जयमल सिंह दा सावन प्यारा (2), दुध चों पानी छांणेगा,
जिस ते मेहर .....

5. *सावन सोहणा बाग लगाया, विच बिठाया माली ऐ,*
नाम ओहदा कृपाल प्यारा, संगत दा ओह वाली ऐ, *(2)*
सुणयो अरज गरीब 'अजायब' दी (2), रक्खयो माण निमाणे दा,
जिस ते मेहर .....

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

काल की नगरी

स्वामी जी महाराज की बानी DVD-118 मुम्बई

आपके आगे स्वामी जी महाराज का छोटा सा शब्द रखा जा रहा है। सन्त–महात्मा मालिक के प्यारे संसार में अपना कोई फायदा उठाने के लिए नहीं आते और न ही वे ऐशो–ईशरत की जिंदगी बिताने के लिए आते हैं। बेआरामी सन्तों की जागीर होती है, परमात्मा ने सन्तों को बेआरामी विरासत में ही दी होती है।

महाराज कृपाल कहा करते थे कि जब परमात्मा सबको रोजी देने लगा, सन्तों की बारी आई तब परमात्मा ने सन्तों के हाथ के ऊपर हाथ रखकर नीचे की तरफ मार दिया, वह बिखर गया। परमात्मा ने सन्तों से कहा कि आप संसार में जाकर इस चोगे को चुगें। परमात्मा जानता है कि ये जहाँ जाकर अपना चोगा चुगेंगे उस जगह लोगों को भक्ति में लगाएंगे, मेरे साथ जोड़ेंगे।

हम लोग अजीब ही किस्म के मालिक होते हैं। जब महात्मा संसार में आते हैं तब बहुत थोड़े लोग ही उनकी कद्र करते हैं। जब महात्मा संसार से चले जाते हैं तो हम लोग उनकी जगह पर कोई न कोई मठ खड़ा कर लेते हैं उसे मजहब या समाज की शक्ल दे देते हैं। अच्छा तो यही था कि जिसके नाम पर ये चीजें बनाई हैं जब वह आया था उस समय उससे फायदा उठाते लेकिन हम दुनियादार शुरू से ही ऐसा कर रहे हैं।

गुरु नानकदेव जी महाराज एक जगह सतसंग करने के लिए गए। वहाँ के लोगों ने गुरु नानकदेव जी का सतसंग तो क्या

सुनना था कुछ लोगों ने आपको ईंट–पत्थर मारे कि यह सही उपदेश नहीं करता। गुरु नानकदेव जी ने उन लोगों से कहा, ''आप यही बसते रहें।'' गुरु नानकदेव जी के साथ आपके सेवक बाला और मर्दाना भी थे। आप आगे किसी और जगह सतसंग करने गए तो वहाँ के लोगों ने गुरु नानकदेव जी की बहुत सेवा की, सतसंग में बहुत लोगों की हाजिरी थी। गुरु नानकदेव जी ने उन लोगों से कहा, ''आप लोग उजड़ जाएं।''

सन्तों की बात को बहुत कम प्रेमी समझते हैं क्योंकि सन्तों की हर बात में राज़ होता है। मर्दाना ने गुरु नानकदेव जी से कहा, ''महाराज जी! आप कैसे वर दे रहे हैं? जिन लोगों ने सेवा की सतसंग सुना नाम का अभ्यास किया उन्हें आपने कहा, ''तुम लोग उजड़ जाओ।'' जिन्होंने आपको ईंट–पत्थर मारे, सतसंग नहीं करने दिया उन लोगों से आपने कहा, ''यहीं बसते रहो।''

गुरु नानकदेव जी ने मर्दाना से कहा, ''तुझे इस राज़ का पता नहीं, जो अंदर जाते हैं उन्हें ज्ञान होता है। मैंने जिन लोगों से कहा कि तुम लोग उजड़ जाओ उनमें से एक–एक आदमी जहाँ भी जाएगा वह उस पूरे गाँव का सुधार करेगा। आस–पास बैठने वालों को अच्छी शिक्षा देगा मेरी भक्ति के साथ जोड़ेगा। जिन लोगों ने ईंट–पत्थर मारे, सतसंग को बुरा समझा वे उसी जगह रहें ताकि उनकी बदबू बाहर न फैले क्योंकि वे लोग जहाँ भी जाएंगे जीवों को मुझसे तोड़ेंगे।''

कबीर साहब से पूछा गया कि संसार में ऐसा कौन सा आदमी है जो किसी का फायदा सोचे लेकिन उसमें उसकी अपनी

कोई गर्ज न छिपी हो। कबीर साहब ने कहा कि सच का कभी नाश नहीं होता, वक्त आने पर सच उजागर हो जाता है। ऐसे बहुत से गुण पेड़ों में और बारिश में भी हैं लेकिन ये हमारी समझ से बाहर हैं। समुंद्र में से पानी भाप बनकर उड़ता है बादलों की शक्ल में जाकर पहाड़ो के ऊपर ऊँची–नीची जगह में जाकर बारिश बनकर फिर जमीन पर आता है। पानी काफी ठोकरें खाकर लोगों की प्यास बुझाता है। पानी से हमारी खेती हरी–भरी होती है। पानी पराए भले के लिए किस तरह ठोकरे खाता है?

इसी तरह पेड़ में ये गुण हैं कि पेड़ अपने सिर के ऊपर धूप झेलता है। अपनी ताकत खर्च करके अपने में से मेवे पैदा करता है जिससे इंसानों की भूख पूरी होती है। मेवे कई किस्म की ताकत देते हैं। महात्मा के अंदर भी ऐसा ही गुण होता है। सन्तजन मालिक के प्यारे खुद कष्ट सहते हैं। संसार में आकर अपने प्यारे बच्चों को संदेश देते है, परमात्मा की भक्ति का साधन बताते हैं। कबीर साहब कहते है:

तरवर सरवर सन्तजन चौथे बरसे मेह।
पर स्वार्थ के कारणे चारों धारे देह।।

गुरु नानकदेव जी से पूछा गया क्या कोई ऐसा भी मित्र है जो बिना मुआवजे हमारी बेहतरी सोचता हो? आपने कहा हाँ! सन्त में यह गुण होता है, सन्त दुनिया का भला सोचते हैं।

परथाए साखी महा पुरख बोलदे, साँझी सगल जहानें।

पल्टु साहब कहते हैं कि सन्तों की अपनी क्या गर्ज होती है?

उन्हें क्या है चाह फिरत हैं मुल्क बथेरा।
जीव तारन कारणें सेहंदे दुख घनेरा।।

मैं बताया करता हूँ कि बहुत लोगों ने कोशिश की लेकिन सारी जिंदगी कोई भी हमारे सतगुरु महाराज कृपाल को हार नहीं पहना सका। सन्त किसी भी मान–बड़ाई के भूखे नहीं होते अगर उन्हें भूख है तो वे सेवक से भजन–सिमरन की ही आशा रखते हैं कि भजन–सिमरन करके लाओ, यही आपका सच्चा प्यार है यही सच्ची नमस्कार है।

मैं बताया करता हूँ कि बच्चा खेल का शौकीन होता है, स्कूल नहीं जाना चाहता, माता–पिता बच्चे को स्कूल में दाखिल करवा देते हैं। माता–पिता बच्चे को पढ़ाई के फायदे बताते हैं, डराते–धमकाते और लालच भी देते हैं कि तू पढ़ाई करने से बहुत ऊँचे ओहदे पर चला जाएगा। ऐसा करके माता–पिता टीचरों की मदद कर रहे होते हैं, टीचरों के लिए बच्चे को शिक्षा देना आसान हो जाता है। जब बच्चा यूनिवर्सिटी पास कर लेता है

अच्छे ओहदे की कुर्सी पर बैठ जाता है फिर बच्चे को पता लगता है कि मेरे लिए पढ़ाई करनी कितनी जरूरी थी। माता–पिता ने मेरे ऊपर बहुत उपकार किया है। बच्चे को पढ़ाई का ज्ञान हो जाता है, वह अपने टीचरों की भी इज्जत करता है।

आप देखें! परमार्थ के रास्ते में कोई हमारी मदद नहीं करता। हमारा मन शराबों–कबाबों, विषय–विकारों और दुनिया की ऐशो–ईशरत का शौकीन है इसके दिल में इन चीजों की बहुत तड़प लगी हुई है अगर कोई भूली आत्मा भजन–अभ्यास की तरफ आती भी है तो माता–पिता भी मदद नहीं करते बल्कि वे बच्चे को मना करते हैं।

पिछले महीने दिसम्बर में एक पिता अपने बच्चे को लेकर मेरे पास आया। उसने परेशान होकर कहा कि आप इस बच्चे को समझाएं। मैंने पूछा कि क्या बात है मैं इसे क्या समझाऊं? उसने कहा, ''देखो जी! यह बच्चा भजन करता है, आप इसे समझाएं कि यह भजन न करे।'' ऐसा हम सबके साथ ही बीता होता है।

मेरे पिता मुझे साधु–सन्तों के पास ही ले जाते रहे कि यह घर के कारोबार में नहीं लगता, मुझे इसका बहुत फिक्र रहता है। किसी ने मदद तो क्या करनी है बल्कि इस तरफ से हटाते हैं। मेरे पिता फिरते–फिरते बाबा बिशनदास जी के पास आए।

बाबा बिशनदास जी बहुत लाधड़क महात्मा थे, आप बात करते हुए किसी की परवाह नहीं करते थे। बाबा बिशनदास जी ने कुछ देर मेरी तरफ देखा फिर कहने लगे, ''देखो भई! यह संसार में तुम्हारे लिए नहीं आया यह तो रब का बन्दा है।'' पिता जी को बहुत हैरानी हुई कि मैं इसे बाबा के पास लाया था कि

यह बच्चे के सिर पर हाथ फेरेगा, यह बच्चा घर का कारोबार करेगा लेकिन इसने कुछ और ही कह दिया। मुझे 'दो–शब्द' का भेद बाबा बिशनदास जी से ही मिला था।

ऐसा ही गुरु नानकदेव जी के साथ बीता था। उनके माता–पिता उन्हें कभी किसी मौलवी के पास लेकर जाते तो कभी किसी वैद्य के पास लेकर जाते कि इसे कुछ बीमारी है यह घर के कारोबार में नहीं लगता। गुरु नानकदेव जी अपनी कल्पना में लिखते हैं:

कोई आखे भूतना कोई कहे बेताला।
कोई आखे आदमी नानक बेचारा।।

कोई मुझे भूतना कहता है तो कोई किसी और किस्म के लफ्ज इस्तेमाल करता है। कोई कहता है कि यह बेचारा नानक होगा जो घर के कारोबार में नहीं लगता, दोपहर में फिरता रहता है; कभी किसी गाँव में तो कभी किसी शहर में जाता है।

प्यारेयो! परमार्थ में कोई हमारी मदद नहीं करता। हम खेलने वाले बच्चे की तरह विषय–विकारों के शौकीन होते हैं। जब हम सन्तों के सतसंग में जाते हैं सन्तों को हमारे साथ हमदर्दी होती है हम कुछ कमाई करते हैं वे हमारे ऊपर अपनी तवज्जो देते हैं तो हम तीसरे तिल पर एकाग्र होना शुरू कर देते हैं। अंदर प्रकाश टिकना शुरू हो जाता है, बाहर के खेल से अपने आप ही दिलचस्पी खत्म हो जाती है। अंदर जाकर गुरु के साथ सच्चा प्यार, सच्ची श्रद्धा आ जाती है। फिर हमें माता–पिता, बहन–भाई और कोई भी मना करे तो हम हटते नहीं। हम मजबूत हो जाते हैं हमें सच्चाई का ज्ञान हो जाता है।

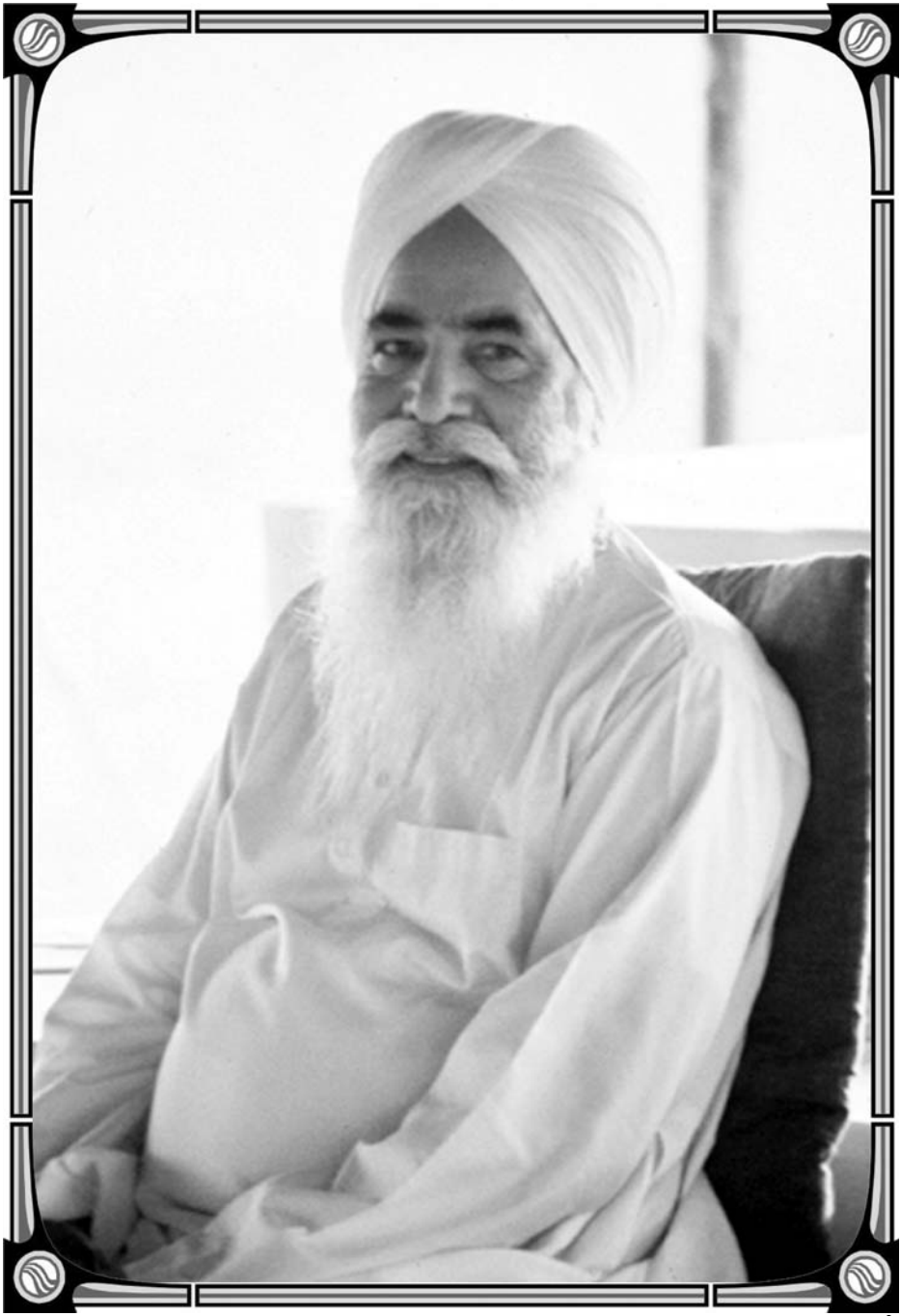

कौन हमारे साथ हमदर्दी करता है, कौन हमारी बेहतरी सोचता है? वह सतगुरु है जिसने हमें शब्द–नाम के साथ जोड़ा है। स्वामी जी महाराज कहते हैं कि मैं इस शब्द में आपको वह बात समझाने की कोशिश करूंगा जो आपके फायदे की है। गौर से इस शब्द को सुने:

कोइ मानो रे कहन हमारी। कोइ मानो रे कहन हमारी।
जो जो कहूं सुनो चित देकर। गौं की कहूं तुम्हारी।।

सन्तों का उपदेश किसी खास कौम, मजहब या मुल्क के लिए नहीं होता। उनका उपदेश हर एक के लिए एक समान होता है। महात्मा सारे संसार को अपना घर समझते हैं। वे संसार में रहने वाली सारी आत्माओं को अपना ही समझते हैं। उनके दिल में हर समाज और हर व्यक्ति की इज्जत होती है।

आप कहते हैं, ''महात्मा की नजर आत्मा के ऊपर होती है। आत्मा निर्दोष है प्रभु की अंश है अगर कोई बुराई है तो वह हमारे मन के अंदर है। महात्मा का उपदेश किसी के लिए व्यक्तिगत नहीं होता सबके लिए एक समान होता है। महात्मा के सेवक हर कौम हर मजहब और हर मुल्क के होते हैं। जो भी उनके पास आता है वे उसे सच्चे नाम के रास्ते पर डाल देते हैं। हमारे ऊपर समाज की जहर चढ़ी होती है इसलिए हम बहस करते हैं लेकिन महात्मा हमें इससे आजाद कर देते हैं।''

महात्मा हमें प्यार से कहते हैं कि आप हमारा कहना मानें। आप जिस समाज, जिस मुल्क, जिस घर में पैदा हुए हैं इनमें से कोई भी आपके साथ जाने वाला नहीं। यहाँ तक कि हमारा शरीर

भी हमारे साथ नहीं जाएगा यह भी पराया मकान है हमने इसे भी यहीं छोड़ जाना है। आप गृहस्थ की जिम्मेवारियां निभाते हुए सुबह उठकर दो–तीन घंटे शब्द–नाम के अभ्यास में लगाएं और अपने घर पहुँच जाएं।

आप जिस **काल की नगरी** में आए हैं यह मौत और पैदाईश की अशान्त नगरी है। जन्म बाद में होता है मौत पहले तैयार खड़ी होती है। अभी मौत से छुटकारा नहीं मिला होता अगला पिंजर फिर तैयार होता है, दस नंबरी की तरह हथकड़ी लगी रहती है। आप सोचकर देखें! जिस शख्स की अदालत में रोज पेशी है उसकी दुनिया में भी बेइज्जती है और वह खुद भी परेशान है लेकिन हमने इसे मंजूर किया होता है। जब मौत आती है तब यमदूत पकड़कर धर्मराज के सामने पेश करते हैं वह हमारे अमल और करतूतें देखता है उसके मुताबिक हमें अगला जन्म दे देता है, वहाँ जाकर हम फिर मौत का सामना करते हैं। हम जहाँ जाकर भी जन्म लेते हैं वहाँ टिक नहीं सकते। जब हम पीछे की वस्तुएं यहाँ नहीं लाए तो क्या ख्याल किए बैठे हैं कि यहाँ की वस्तुएं हमारे साथ जाएंगी? कबीर साहब कहते हैं:

ऐसे घर हम बहुत बसाए, जब हम राम गर्भ होय आए।

हम पहले ऐसे कई घर बसाकर आए हैं। जब हमें पिछले घर, कौमें, माता–पिता, पति–पत्नी याद नहीं तो आज हम क्या आशा लगाकर बैठे हैं क्या हम इन्हें साथ लेकर जाएंगे? आपको इंसान का जामा हीरा मिला है आप इसे आलस में दुनिया के विषय–विकारों में खराब न करें। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:

दिवस गँवाया खेल के रात गँवाई सोए।
हीरे जैसा जन्म है कौडी बदले जाए।।

गुरु अर्जुनदेव जी ने इस जामें को हीरा कहा है। विषय–विकार कौडियां हैं। इंसान का जामा बहुत ऊँची चीज है, इस जामें में कमाकर ले जाने वाली वस्तु 'शब्द–नाम' है।

जग के बीच बँधे तुम ऐसे। जैसे सुवना नलनी धारी।

आप हमें प्यार से समझाते हैं कि आप किस तरह संसार में आकर फँसे हुए हैं? हम सबसे पहले तन–मन के पिंजरे में कैद हैं, यह बिमारियों और परेशानियों का घर है। हमें पता नहीं कि कब कौन सी परेशानी उठ खड़ी होगी? आप संसार में इस तरह फँसे हुए हैं जैसे तोता पिंजरे में फँसा होता है।

तोता पकड़ने वालों मे यह कला होती है कि वे लोग पानी के ऊपर नलकी लगा देते हैं और वहाँ चोगा फैला देते हैं। तोता चोगे के प्यार में उस नलकी के ऊपर बैठ जाता है वह कला घूम जाती है तोता उल्टा हो जाता है। तोता पैर छोड़ने के लिए तैयार नहीं उसे पता है कि नीचे पानी है अगर मैं पानी में गिर गया तो डूबकर खत्म हो जाऊंगा। वे लोग तोते को आसानी से पकड़ लेते हैं, पिंजरे में डाल देते हैं फिर तोते को बोली सिखाते हैं। वह थोड़ी देर फड़फड़ाता है। तोते का पिंजरे के साथ प्यार होता है, उसे पिंजरा प्यारा लगता है आखिर वह टिककर बैठ जाता है, हमारी आत्मा की भी यही हालत है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

सुहट पिंजर प्रेम का बोले बोलनहार।
सच चुगे अमृत पिए उडे ते एको बार।।

जिस तरह तोता पिंजरे के साथ प्यार करके कई किस्म की बोलियां बोलता है। तोता एक बार उड़कर ही आजाद हो सकता है। हमारा जिस्म पिंजरा है, हमारी आत्मा तोता है। आत्मा इस पिंजरे के साथ प्यार करके कभी किसी समाज में, कभी किसी प्रान्त में जाकर जन्म लेती है; वहाँ की बोली बोलती है। अगर यह दुनिया के रसों–कसों का स्वाद छोड़कर 'शब्द–नाम' का चोगा चुगे तो इसे फिर इस दुखी **काल की नगरी** में हाजिरी नहीं लगानी पड़ेगी।

स्वामी जी महाराज बहुत सुंदर मिसाल देकर समझाते हैं कि आप संसार में इस तरह फँसे हुए हैं जैसे तोता पिंजरे के साथ प्यार करके पिंजरे में फँसा बैठा है, हमारी भी यही हालत है।

मरकट सम तुम हुए अनाड़ी। मुट्ठी दीन फँसा री।।

अब आप बंदर की मिसाल देकर समझाते हैं जिस तरह बंदर को पकड़ने वाले एक तंग मुँह का बर्तन लेकर उसे जमीन में गाड़ देते हैं। वे लोग दूर होकर बैठ जाते हैं और उस बर्तन में कुछ फुल्लियां डाल देते हैं। बंदर फुल्लियां देखकर सब्र नहीं करता लालचवश होकर अपना हाथ उस बर्तन के अंदर डाल देता है। जब बर्तन में हाथ डालते हैं तब हाथ पतला होता है जब मुट्ठी बंद करते हैं तो हाथ मोटा हो जाता है।

बंदर को लालच होता है कि मेरी फुल्लियां रह न जाएं मैं सारी फुल्लियां ले लूं; वह बहुत चीं–चीं करता है रोता–पुकारता है लेकिन उन फुल्लियों को छोड़ने के लिए तैयार नहीं होता। बंदर पकड़ने वालों ने यह तरीका अपनाया होता है वे बहुत आसानी से बंदर को पकड़ लेते हैं फिर बंदर के गले में जंजीर

डालकर उससे घर–घर मंगवाते हैं। बंदर उनके कहने के मुताबिक नाच करता है। बंदर के अंदर एक ही कमजोरी थी कि उसके अंदर लालच था।

हमने लालचवश होकर दुनिया के सामान को गले लगाया हुआ है। पति गुजर जाता है तो पत्नी की क्या हालत होती है? पत्नी गुजर जाती है तो बेचारे पति की क्या हालत होती है? जवान बच्चा गुजर जाए तो माता–पिता की क्या हालत होती है? छोटे बच्चे के माता–पिता गुजर जाएं तो उसकी क्या हालत होती है?

हमारे भूले मन को उस बंदर की तरह कभी चोट नहीं लगती कि अब तो हम इन्हें त्यागकर सच्चे मन से भजन–सिमरन करें। महात्मा का मतलब यह नहीं कि हम बाल–बच्चे छोड़कर जंगलो–पहाड़ों में छिप जाएं। महात्मा हमें बताते हैं कि आप गृहस्थ की जिम्मेवारियाँ निभाएं। जंगलों–पहाड़ों में कौन जाता है, भगवे कपड़े कौन पहनता है? जो घर की जिम्मेवारियों से भागता है जो कमजोर दिल आदमी है। पहले हम बच्चे पैदा कर लेते हैं बाद में लोगों को महात्मा बनकर दिखाते हैं कि हमारा बच्चों के साथ कोई प्यार नहीं, यह सब तो पहले ही सोचना चाहिए था।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि मेरे पास कई किस्म के आदमी आते हैं। कोई कहता है, ''महाराज जी! मैं शादी करवा लूं?'' मैं कहता हूँ, ''हाँ भई! यह तेरी मौज है अगर तू यह जिम्मेवारी उठा सकता है तो बड़े शौक से शादी करवा ले।'' कोई आकर कहता है, ''मैं शादी न करवाऊँ।'' मैं उससे कहता हूँ, ''यह तेरी मौज है अगर तू शादी किए बिना जिंदगी गुजार सकता है, व्याभिचार नहीं करेगा तो शादी न करवा।''

जब पश्चिम के लोग इंटरव्यू में आते हैं तो उनके आम सवाल इसी तरह के होते हैं। मैं उन्हें महाराज सावन सिंह जी की यही बात बताया करता हूँ कि देखो प्यारेयो! अच्छी तरह सोच लें! शादी करवाकर बच्चे पैदा करके अगर त्यागी बनना है तो उन बच्चों का क्या होगा? आपका भजन नहीं बनेगा।

बाहर हमारा शरीर हर चीज मांगता है। यह शरीर कपड़े मांगता है रोटी मांगता है रहने के लिए मकान भी मांगता है। यह कहाँ की अक्लमंदी है शादी न करवाना कि जिम्मेवारी उठानी पड़ेगी और पराए घर की तरफ झाँकना। हर एक महात्मा ने व्याभिचार के लिए मना किया है कि उससे तो शादी करवा लेना ठीक है। महात्मा कहते हैं कि हम दुखी हैं चिल्लाते भी बहुत हैं लेकिन हम इन चीजों को छोड़ने के लिए तैयार नहीं होते।

उद्धों ने कृष्ण भगवान से कहा, ''महाराज जी! आपके स्वर्ग बैकुंठ बहुत अच्छे हैं और आप बहुत दयावान हैं। आप दुनिया को अपने स्वर्ग में जगह दें।'' कृष्ण भगवान ने कहा, ''देख उद्धों! मेरे दिल में इन लोगों के लिए बहुत जगह है लेकिन कोई भी यहाँ आने के लिए तैयार नहीं।'' उद्धों ने कहा, ''मैं किस तरह मानूं अगर किसी आदमी को स्वर्ग में आने के लिए कहा जाए और वह न आए?'' कृष्ण भगवान ने कहा, ''तू जितने लोगों को ले आएगा मैं उन सबको यहाँ जगह दे दूंगा।''

उद्धों ने सोचा सुअर की योनि सबसे बुरी है यह सारा दिन गंद में मुँह मारता है मैं क्यों न इसे स्वर्ग में ले जाऊँ? पुण्य होगा। उद्धों ने सुअर से कहा, ''मैं तुझे स्वर्ग में ले चलूं?'' सुअर ने

कहा, ''क्या वहाँ मैला–पखाना है?'' उद्धों ने कहा, ''नहीं।'' सुअर ने कहा कि जहाँ मैला–पखाना नहीं ऐसे स्वर्ग किस काम के? फिर सुअर ने पूछा, ''वहाँ बाल–बच्चे हैं?'' उद्धों ने कहा, ''ऐसे बंधन पैदा करने का स्वर्ग में क्या काम।'' सुअर ने कहा कोई मूर्ख ही तेरी बात में आएगा, मैं जाने के लिए तैयार नहीं।

उद्धों बहुत अफसोस के साथ कृष्ण भगवान के पास आया। कृष्ण भगवान ने पूछा, ''तू अकेला ही आया है किसी को साथ नहीं लाया?'' उद्धों ने कहा कि दुनिया बहुत दुखी है रोती–चिल्लाती है लेकिन उसे छोड़ने के लिए कोई तैयार नहीं। स्वामी जी महाराज भी यही कहते हैं हमारी हालत उस बंदर की तरह है।

और मीना जीह्वा रस माती। काँटा जिगर छिदा री।।

अब आप एक मछली की मिसाल देते हैं कि मछली पानी में रहने वाला जीव है उसके अंदर जीभ का स्वाद है। शिकारी लोग कुंडी में गोश्त लगाकर जाल को पानी में डाल देते हैं। मछली को गोश्त खाने का चस्का होता है वह फौरन कुंडी को गले में फँसा लेती है। शिकारी को पता लग जाता है कि मेरे जाल की रस्सी तन गई है वह फौरन रस्सी बाहर खींच लेता है। शिकारी के जाल में बहुत बड़े–बड़े मगरमच्छ भी फँस जाते हैं जो अपनी ताकत से इंसान को साबुत ही निगल लेने की शक्ति रखते हैं। एक छोटी सी कमजोरी की वजह से शिकारी लोग उसका कीमा–कीमा करके हांडियों में चढ़ाते हैं, जीभ के विषय ने मछली की जान ले ली।

गज सम मूरख हुए इस बन में। झूठी हथनी देख बँधा री।

स्वामी जी महाराज मिसाल देकर समझाते हैं कि यह दुनिया विषय–विकारों का जंगल हैं। हमारा मन पागलों की तरह इस दुनिया में फिर रहा है। काम इंसान और पशु–पक्षियों को भी पागल कर देता है। हाथी बहुत ताकत का मालिक है। हाथी को पकड़ने वाले लोग बहुत गहरा खड्डा खोदकर हल्की सी छत डाल देते हैं और उसके ऊपर कागजों की हथिनी बनाकर खड़ी कर देते हैं। हाथी उसे असली हथिनी समझता है क्योंकि जब पागलपन का दौरा पड़ता है काम जोश मारता है तब नजदीक खड़ा इंसान भी दिखाई नहीं देता।

कबीर साहब कहते हैं कि कामी बेशर्म होता है किसी की लज्जा नहीं करता। हाथी को होश नहीं होती कि यह सच्ची हथिनी है या कागज की है। हाथी खड्डे में गिर जाता है कई दिन भूखा रहता है। महावत लोग अंकुश मारकर उसे पकड़ लेते हैं और उसके ऊपर चढ़े फिरते हैं। हाथी कितनी ताकत का मालिक होता है, काम के विषय ने उसकी मिट्टी पलीत कर दी।

क्या क्या कहूं काल अन्याई। बहुविधि तुमको फाँस लिया री।

स्वामी जी महाराज कहते हैं मैं आपको क्या–क्या मिसालें दूं। काल अन्यायी ने आपको फँसा लिया है। मछली में जुबान का दोष है। हाथी में काम का दोष है। इन्होंने एक–एक दोष की वजह से अपने आपको दुःखों में फँसाया है। इंसान में पाँच दोष हैं, इससे क्या आशा की जाए कि यह आसानी से बच जाएगा? इसका मतलब यह भी नहीं कि आज तक कोई बचा नहीं; जो भी बचा है 'शब्द–नाम' की कमाई से बचा है। महात्मा रविदास कहते हैं:

मृग मीन भृंग कुंचर एक दोख विनाश।
पंच दोख असाध जामे ताकी के तक आस।।

मैं बताया करता हूँ कि काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की स्थूल गाँठ हमारी आँखों के पीछे सूक्ष्म त्रिकुटी ब्रह्म के अंदर है। जब हमारी आत्मा इससे ऊपर पारब्रह्म में पहुँचती है वहाँ स्थूल, सूक्ष्म और कारण के तीनों पर्दे उतर जाते हैं, वहाँ इन चीजों का नामोंनिशान तक नहीं। वहाँ प्यार है वह प्यार का ही देश है। जब तक हम वह घाटी पार नहीं करते तो किस तरह हम बच सकते हैं। अगर कोई यह ढ़ोग रचता है कि मैं इन पाँच दोषों से बचा हुआ हूँ तो आप दिल से ख्याल ही निकाल दें पता नहीं मन ने किस समय गिरा देना है!

हम जब तक हिन्दुस्तान में हैं हमें हिन्दुस्तान के कायदे–कानूनों का पालन करना पड़ता है। जब हिन्दुस्तान छोड़कर किसी और देश में चले जाते हैं तो वहाँ की सरकार का कायदा–कानून लागू हो जाता है। इसी तरह जब तक हम **काल की नगरी** में रह रहे हैं काल ने आत्मा के ऊपर विषय–विकार चढ़ाए हुए हैं। पता नहीं किस समय दाग लग जाना है। जब हम दयाल के देश में जाएंगे वहाँ इन पाँच डाकुओं की पहुँच नहीं, तब ही हम दम भर सकते हैं लेकिन महात्मा फिर भी यहाँ दम नहीं भरते।

महाराज सावन सिंह जी एक महात्मा की कहानी सुनाया करते थे कि वह महात्मा किसी गांव में जाया करता था। उस गाँव की एक औरत हमेशा ही उन्हें ताना मारती, ''आपके मुँह पर दाढ़ी है या झाड़ी है?'' महात्मा बहुत समझदार थे अंदर जाते थे,

शान्त स्वरूप थे। महात्मा जब भी वहाँ से गुजरते उस औरत का यही सवाल होता था कि महात्मा जी मैं आपसे रोज यही सवाल करती हूँ लेकिन आप जवाब देकर नहीं जाते? महात्मा ने उस औरत से कहा फिर किसी समय जवाब देंगे।

जब महात्मा का अंत समय आया तो उसने अपनी चिता तैयार करवा ली और अपने एक शिष्य से कहा कि अब उस औरत को बुलाकर ले आओ, मैं उसके सवाल का जवाब दे जाऊं। वह यह न समझे कि महात्मा ने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया। औरत ने आकर कहा, ''महात्मा जी! आज आपने मुझे किस तरह याद किया?'' महात्मा ने कहा, ''बेटी! तू रोज मुझसे पूछती थी कि मुँह पर दाढ़ी है या झाड़ी है? आज मैं तुझे इस बात का जवाब देता हूँ कि मैं चिता पर बैठ चुका हूँ आग लगने वाली है। मेरे साँस की गतिविधि बस रूकने ही वाली है। मैं आज अपनी दाढ़ी साबुत लेकर जा रहा हूँ।'' महात्मा दम नहीं मारते ऊपर पहुँचकर भी मन की असलियत को समझकर यही बताते हैं कि आप इन पाँचों डाकुओं से बचें, नाम की कमाई करें।

तुम अनजान मर्म नहिं जाना। छल बल कर इन फाँस लिया री।।

आप कहते हैं कि इस **काल की नगरी** में बहुत छल–बल हैं। काल हम जीवों को फँसाकर बैठा हुआ है। हम अज्ञानता के वश हैं अंजान हैं इस दुनिया से वाकिफ नहीं। हमें माता–पिता से थोड़ी बहुत जानकारी मिलती है कि यह हमारी माता है, यह बहन है, यह भाई है और हमने संसार में कैसे रहना है? माता–पिता भी संसारी जीव होते हैं उन्हें भी असलियत का ज्ञान नहीं होता कि

किस तरह इस विषय–विकारों के जंगल से निकलना है। इस **काल की नगरी** में कितनी बुरी चीजें हैं जो हमें नहीं अपनानी।

छूटन की विधि नेक न मानो। क्यों कर छूटन होय तुम्हारी।।

शान्त मन से सोचें कि सन्त हमें इनसे छूटने की विधि बताते हैं लेकिन हम उनकी बात नहीं मानते। मुझे प्रेमी मिलने आते हैं वे अपने कष्ट बताते हैं तब मैं उन्हें एक ही दवाई बताया करता हूँ:

संसार रोगी नाम दारू मैल लगे सच बिना।

नाम सब दुखों से छुटकारा पाने की दवाई है। आपको छूटने की जो विधि बताई है आप उसे मानने के लिए तैयार नहीं। प्रेमियों का यही जवाब होता है कि भजन तो हमसे होता नहीं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जो लोग यह कहते हैं कि हमसे भजन नहीं होता ऐसे लोग अपने साथ कितनी बेइंसाफी कर रहे हैं? हम खाना खाते हैं दुनियावी और मन–इन्द्रियों के सब काम करते हैं तो क्या हम अपने घर पहुँचने का साधन नहीं कर सकते?'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

बुरे काम को उठ खलोया, नाम की बेला पै पै सोया।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''अगर कोई बुराई करनी है विषय–विकारों की तरफ जाना है तो हमारी नींद उड़ जाती है। नाम जपना हो तो हम कई साधन ढूंढते हैं। सोचते हैं रात बड़ी है नाम जप लेंगे अगर अभ्यास में बैठते हैं तो सो जाते हैं फिर शिकायत करते हैं कि मुझसे भजन नहीं होता।

सतगुरु सन्त हुए उपकारी। उनका संग करो न सम्हारी।।

दुनिया में सन्त–महात्मा परोपकार करने के लिए आते हैं। महात्मा हमें शब्द–नाम के साथ जोड़ते हैं लेकिन हम उनकी संगत में दिखावे के लिए ही जाते हैं अगर सतसंग में जाते भी हैं तो कभी इधर देखते हैं तो कभी उधर देखते हैं। हमें जिस तरह सतसंग में बैठना चाहिए हम उस तरह नहीं बैठते। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे:

हथ कार वन्नी दिल यार वन्नी।

अगर हम एक घंटा आराम से बैठकर सतसंग सुनें और उसे अपने ऊपर लागू करें कि महात्मा सतसंग में किस बात पर जोर देते हैं। सतसंग में आकर हमें अपनी कमियों का पता लगता है, हमें उन कमियों को छोड़ना भी चाहिए। इंसान में थोड़े से ऐब होते हैं अगर हम एक सतसंग में एक ऐब और दूसरे सतसंग में दूसरा ऐब छोड़ें तो हम थोड़े ही दिनों में कामयाब हो सकते हैं लेकिन हमारी हालत कोल्हू के बैल की तरह है जैसे वह घर में ही पचास मील चक्कर लगा लेता है। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

आगे पाछे बहु पछताऊं समय पड़े पर होवत चोरा।

सतगुरु संसार में आकर नाम का होका देते हैं हमारी बेहतरी के बारे में बताते हैं लेकिन हम श्रद्धा प्यार से सतसंग में नहीं जाते, हमारी यह हालत है:''

पत्थर पाणी लेखा वरता।

पत्थर को पानी में चाहे जितनी देर मर्जी रख दें उसमें पानी दाखिल नहीं होता। इसी तरह हम चाहे जितने भी सतसंग सुन लें जब तक हम उस पर अमल नहीं करते उसे अपने ऊपर लागू नहीं करते तब तक हम कैसे कामयाब हो सकते हैं?

प्यारेयों! मेरी आत्मा के परमात्मा सतगुरु जब मेरे आश्रम में आए उससे थोड़े दिन पहले मेरे रिश्तेदार आए थे। उन रिश्तेदारों के घर में शादी का प्रोग्राम था। जिस तरह जंगम लोग घर में आकर घंटी बजाते हैं उसी तरह उन्होंने दरवाजे के बीच खड़े होकर अपना बर्तन खड़काया और सतनाम वाहेगुरु की आवाज लगाई। मैं ऊपर चौबारे से देख रहा था कि ऐसे कौन लोग आ गए हैं। मैंने उन्हें बुलाकर कहा, ''आप लोगों ने इतना कष्ट क्यों उठाया?'' उन रिश्तेदारों ने अपनी सारी समस्याएं और माँगें मेरे आगे रख दी, मैंने उनसे बहुत मुश्किल से पीछा छुड़वाया।

उससे थोड़ी देर बाद ही महाराज कृपाल मेरे आश्रम में आए। आपने सबसे पहले यही पूछा, ''सुना भई! तेरे भजन का क्या हाल है?'' मैं उन दिनों 'दो–शब्द' का अभ्यास कर रहा था। मुझे जमीन के अंदर गुफा खोदकर अभ्यास करते हुए तकरीबन अठारह साल हो गए थे। दिन–रात यही अरदास थी कि तू जहाँ कहीं भी है मुझे आकर मिल, उसने मेरे दिल की पुकार को सुना। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

बिन बोलया सब कुछ जाणंदा, किसपे करिए अरदास।

बड़ी–बड़ी अरदासें सूरज को बत्ती दिखाने के बराबर होती हैं। आपके अंदर शब्द रूप गुरु बैठा है वह आपकी हर जरूरत को जानता है। जब आपने आकर भजन के बारे में पूछा कि सुना भई! भजन–अभ्यास कैसा चल रहा है? मुझे थोड़ी बहुत कविता बोलने की आदत थी। मैंने यही कहा:

आए लक्खां ही परौणें पर ऐसा कोई आया ना।
आपो आप सब दस्सी किसे भजन कराया ना।

गौंदे तुर गए सब अपने ही गौंणे।
भाग जागे साडे वीर नूं साडे आए ने सन्त परौंणे।।

सब अपनी–अपनी जरूरतें बताते हैं लेकिन किसी ने भजन का नाम नहीं लिया। हम सच्चे दिल से उनकी शरण ले लें वे जो बताते हैं हमारे फायदे के लिए ही बताते हैं। उस समय बहुत लोग महाराज जी के आस–पास घूमते थे कि किसी न किसी तरह हमारी पिक्चर भी महाराज जी के साथ आ जाए लेकिन मेरे लिए यह हुक्म था, ''मैं ही तेरे पास आऊँगा तूने अपना अभ्यास करना है।'' यह आपकी दया थी कि आप सदा ही अपने इकरार के मुताबिक आते रहे।

जो लोग आपकी बख्शीश को नहीं समझ सके उन्होंने कहा कि हमने महाराज जी के ड्राईवर से पूछा था कि वे बीमारी के समय वहाँ नहीं गए। मैंने हँसकर कहा, ''आपने वह गुरु ढूंढा है जो ड्राईवर के आसरे चलता था लेकिन मुझे वह गुरु मिला है जो किसी ड्राईवर के आसरे नहीं चलता वह शब्द रूप है, वह अंदर की तार को समझता है। कोई अपने दिल की तार खड़काकर तो देखे वह कैसे आता है?''

वे दयाल अस जुगत लखावें। कर दे तुम छुटकारी।।

सतगुरु दयालु पुरुष होते हैं वे दया करना ही जानते हैं। उनके पास सदा दया होती है। वे नाम का भेद बताऐंगे जिससे तेरा छुटकारा हो जाएगा। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

सतगुरु दया का रूप है जिसनूं दया दया सदा होय।

पाँच तत्त्व गुन तीन जेवरी। काटें पल पल बंधन भारी।।

यह शरीर पाँच तत्वों का है। इसमें सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण हैं। हम जिस जेवरी के साथ बंधे हुए हैं 'शब्द–नाम' की कमाई से हम इनसे आजाद हो सकते हैं।

उनकी संगत करो भर्म तज। पावो तुम गति न्यारी।।

आप दिल से भ्रम दूर करके उनकी संगत में बैठें। वे आपको जहाँ भेजते हैं आप वहाँ जाएं। आपकी गति और मति ओर ही हो जाएगी। आपके अंदर से उस प्रभु की याद अपने आप ही फूट–फूटकर निकलेगी।

जगत जाल सभ धोखा जानो। मन मूरख संग कीन्ही यारी।।

काल ने यह जगत आत्मा को फँसाने के लिए धोखा रचा है। मूर्ख मन काल का एजेंट है यह सदा धोखे देता है, फँसाता है।

इसका संग तजो तुम छिन छिन। नहिं यह लेगा जान तुम्हारी।।

आप सैकिंड–सैकिंड मन की चौंकीदारी करते रहें, मन की देखभाल करते रहें। ऐसा न हो कि आप इसकी तरफ से बेफिक्र हो जाएं या सुस्त हो जाएं पता नहीं! इसने किस समय आपको किस जाल में फँसा देना है?

अपने घर से दूर पड़ोगे। चौरासी के धक्के खा री।।
बड़ी कुगति में जाए पड़ोगे। वहाँ से तुम को कौन निकारी।।
तां ते अब ही कहना मानो। राधास्वामी कहत विचारी।।

आप कहते हैं, ''हमें इंसान का जामा प्रभु के नजदीक होने के लिए सचखंड पहुँचने के लिए मिला था। अगर हम मन की सोहबत करेंगे तो अपने घर सच्चखंड से दूर हो जाएंगे, चौरासी में चले जाएंगे वहाँ दु:ख ही दु:ख, मुसीबतें ही मुसीबतें है।''***

14 जनवरी 1989

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

सच आखिर सच होता है

एक कमाई वाला महात्मा था, वह प्रेमियों के बुलावे पर बाहर गया। उस जमाने में आज की तरह गाड़ियों और बसों के साधन नहीं थे। आमतौर पर महात्मा पैदल ही यात्रा किया करते थे। महात्मा ने अपने पल्ले में तीन परांठे बाँध लिए। महात्मा को रास्ते में एक लोभी आदमी मिला वह भी उनके साथ चल पड़ा।

उस आदमी के दिल में विचार आया कि महात्मा के पास कुछ न कुछ पैसे तो जरूर होंगे। जब थोड़ा आगे गए रास्ते में एक नहर आई। महात्मा ने कहा, ''भाई! मुझे जंगल दिशा में जाना है तुम मेरे सामान का ख्याल रखना।'' लोभी आदमी ने कहा, ''अच्छा जी! मैं रखवाली करूंगा।''

महात्मा जब दूर चले गए तो उस आदमी ने पैसों की लालच में महात्मा के सामान की तालाशी ली लेकिन पैसे नहीं मिले, सिर्फ तीन परांठे ही थे। लोभी आदमी ने उसमें से एक परांठा खा लिया। महात्मा ने वापिस आकर अपना सामान देखा तो उन्हें मालूम हुआ कि इसने एक परांठा खा लिया है। महात्मा ने उससे पूछा, ''भाई! तूने इसमें से एक परांठा खाया है?'' उसने कहा, ''नहीं जी!''

महात्मा ने उससे कहा, ''तू उस मालिक को याद कर जिसने तुझे पैदा किया है, उसकी सौगंध खाकर कह कि तूने परांठा नहीं खाया।'' लोभी आदमी ने कहा, ''मैं परमात्मा की सौगंध खाकर कहता हूँ कि मैंने परांठा नहीं खाया।'' महात्मा चुप रहे। महात्मा ने बचे हुए दो परांठों में से एक परांठा खुद खा लिया और दूसरा उस लोभी आदमी को खिला दिया।

आगे चलकर दोनों एक नदी पार करने लगे। लोभी आदमी उस नदी में डूबने लगा। महात्मा ने कहा, ''देख भई सज्जना! जिस परमात्मा ने हमें पैदा किया है उसे याद कर, वह परमात्मा हर इंसान की मदद करता है।'' लोभी ने परमात्मा को याद किया और वे डूबने से बच गए। महात्मा ने कहा, ''देख! उस परमात्मा ने हमारी कितनी मदद की है, हमें पानी में डूबने से बचाया है। तू उसी परमात्मा को साक्षी रखकर कह कि तूने परांठा नहीं खाया।'' लोभी ने कहा, ''मैं उसी परमात्मा की सौगंध खाकर कहता हूँ कि मैंने परांठा नहीं खाया।'' महात्मा चुप रहे।

जब आगे गए तो जंगल में आग लगी हुई थी जिससे बचना नामुमकिन था। महात्मा ने कहा, ''देख भई! उस परमात्मा को याद कर जिसने हमें पैदा किया है वही हमें इस आग से बचा सकता

है।'' लोभी ने परमात्मा को याद किया, परमात्मा ने रक्षा की। जब उस जंगल से आगे निकल आए तब महात्मा ने कहा, ''देख भई! परमात्मा ने हम पर बहुत दया–मेहर की है हमें आग से बचाया है। तू उसी परमात्मा की सौगंध खाकर कह कि तूने परांठा नहीं खाया।'' लोभी आदमी ने उसी तरह फिर सौगंध खा ली। हम दुनियादार ऐसे ही हैं:

अगरचे अल्लाह सबका अन्नदाता है फिर भी हर शख्स अल्लाह को पतियाता है।
अल्लाह का कोई शुक्रगुजार नहीं, अल्लाह सिर्फ कसम खाने के काम आता है।।

दुनिया परमात्मा को सिर्फ कसम खाने के लिए ही याद करती है। महात्मा बहुत समझदार और कमाई वाले थे। उन्होंने सोचा जब तक यह झूठ बोलना नहीं छोड़ेगा यह परमात्मा के दरबार में नहीं पहुँच सकेगा। महात्मा का मकसद सिर्फ झूठ छुड़वाना ही था।

महात्मा ने माया की शक्ति से वहाँ पर काफी सोना इत्यादि इकट्ठा कर दिया। उसकी तीन ढ़ेरियां बनाकर लोभी आदमी से कहा, ''एक ढ़ेरी मेरी, दूसरी तेरी और तीसरी उसकी जिसने परांठा खाया है।'' लोभी ने कहा, ''हमें जिस परमात्मा ने पैदा किया है, हमारी पानी से, आग से रक्षा की है, मैं उसकी कसम खाकर कहता हूँ कि वह परांठा मैंने ही खाया है।''

महात्मा का भाव तो उसे समझाने का ही था। महात्मा ने कहा, ''तू पहले क्यों नहीं माना?'' महात्मा तो माफ करने के लिए ही संसार में आते हैं। **सच आखिर सच होता है।**

***

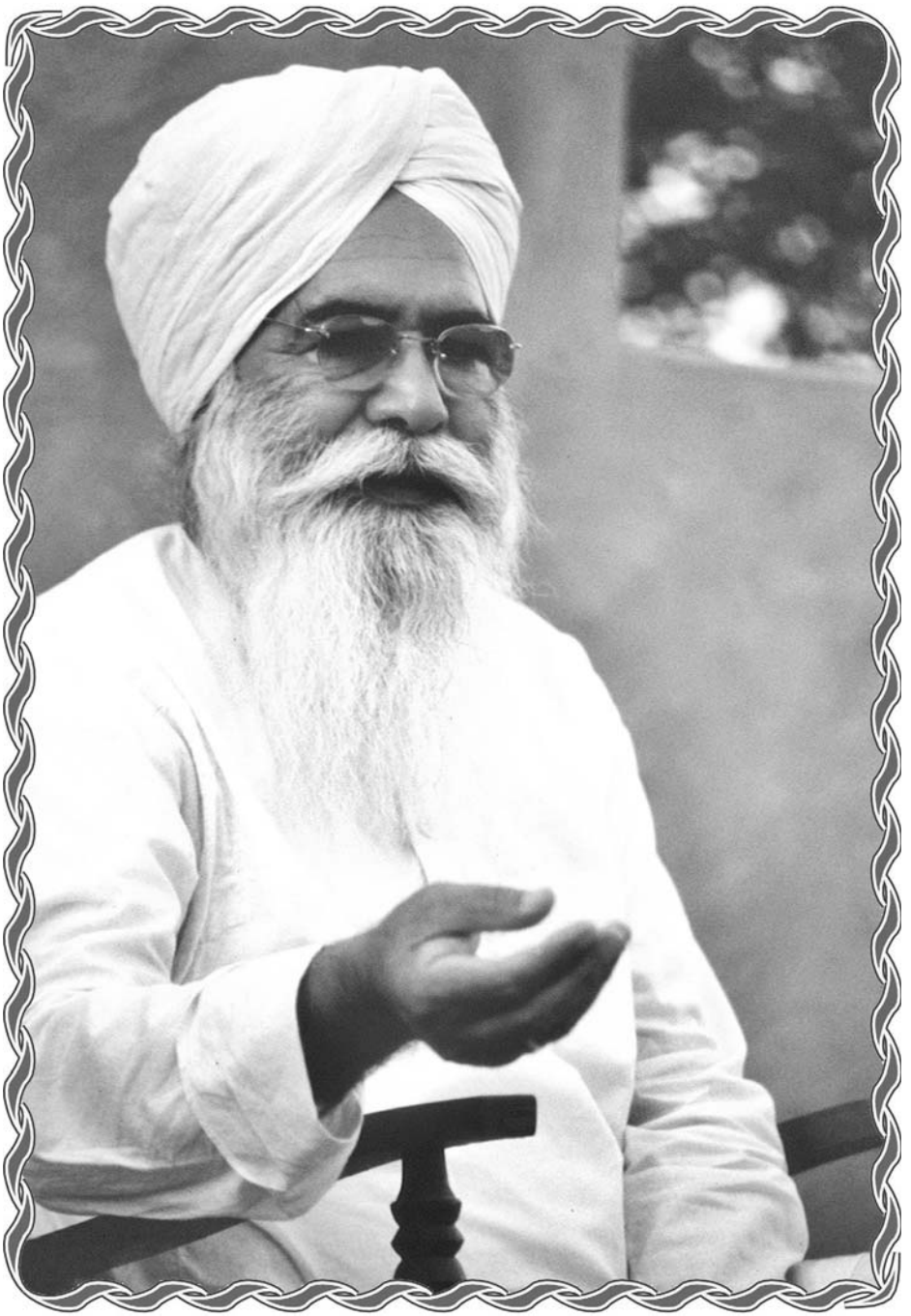

सवाल–जवाब

एक प्रेमी:– प्यारे सन्त जी! स्वामी जी महाराज हुक्का क्यों पिया करते थे? अगर यह बुरा उदाहरण नहीं तो जो इसे पढ़ेगा वह यही समझेगा कि सन्तमत में हुक्का पीने की इजाजत है।

बाबा जी:– पहली बात तो यह है कि समर्थ को कोई दोष नहीं होता वे निर्दोष होते हैं। स्वामी जी महाराज ने अपनी बानी में नाम जपने का उपदेश दिया है हुक्का पीने का उपदेश नहीं दिया। सन्त अपने आस–पास कोई न कोई ऐसा कौतुक कर लेते हैं कि किस जीव को अपनी तरफ खींचना है और किस जीव को ऐसी हरकत दिखानी है? जब जीव सन्त की शरण में आता है तो सन्त अच्छी तरह उस जीव के कर्मों को पढ़ लेते हैं कि इसके ऊपर काल का कितना बोझ है।

स्वामी जी महाराज आगरा शहर में हुए हैं। वहाँ काफी आबादी थी, प्रेमी लंगर तैयार करते थे। मुफ्तखोर लोग नाम नहीं जपते थे सतसंग नहीं सुनते थे वहाँ आकर लंगर में खाना खा जाते और तरह–तरह की बातें बनाते। सन्त अपने सेवकों की बेहतरी चाहते हैं, निन्दा–चुगली की परवाह नहीं करते। निन्दा सन्तों के दरबार की चौंकीदारी करती है। वे किसी इंसान को चौंकीदार नहीं रखते, निन्दा को रख लेते हैं।

एक बार स्वामी जी महाराज ने मुँह में पानी लेकर लंगर में डाल दिया, प्रेमियों के लिए तो वह प्रशाद हो गया। प्रेमियों ने कहा कि आज हमें शीतल प्रशाद मिला है, हमारे बहुत कर्म कट जाएंगे

लेकिन मुफ्तखोरे और स्वादु लोगों ने कहा कि हम इनका झूठा क्यों खाएं? तब से अब तक यह बात चली आ रही है कि ये लोग खाने में थूकते हैं।

बहुत से लोग महाराज सावन सिंह जी से भी यही सवाल करते थे लेकिन कभी भी किसी को खाने में थूककर नहीं खिलाया जाता। परमात्मा के आगे अरदास की जाती है कि तेरा शीतल प्रशाद तैयार है। प्रशाद तेरी रसना लायक हो, साध संगत को तेरा प्रशाद मिले लेकिन यह बात अभी भी प्रचलित है।

मेरे पिछले गाँव में एक आदमी को शराब पीने की आदत थी। उसकी पत्नी उसे हमेशा समझाती कि महाराज कृपाल से नामदान प्राप्त कर ले। उस आदमी ने सोचा अगर मैं नामदान प्राप्त करने के लिए जाऊंगा तो मुझे शराब छोड़नी पड़ेगी। उसने अपनी पत्नी को मेरी मिसाल दी कि उसने नामदान लिया तो उसे घर–बार छोड़ना पड़ा अगर तूने मुझसे घर–बार छुड़वाना है तो मैं भी नामदान ले लेता हूँ।

स्वामी जी महाराज ने अपनी पुस्तक में नाम के बारे में, सच्चखंड के बारे में और गुरु की बड़ाई के बारे में करोड़ों बातें लिखी हैं, आप वे बातें लें। स्वामी जी बनकर आप चाहे जो मर्जी करें। जिन सतसंगियों को हुक्का पीने की आदत होती है वे अपने ऐब छिपाने के लिए ऐसा करते हैं। जब बेसतसंगी लोग उनसे सवाल करते हैं कि आप तो सतसंगी हैं सन्तमत को मानने वाले हैं आप हुक्का क्यों पीते हैं? वे लोग अपना ऐब छिपाने के लिए कह देते हैं कि स्वामी जी भी हुक्का पीते थे। महाराज सावन सिंह

जी कहा करते थे, ''ऐसे लोग एक झूठ को छिपाने के लिए लाख झूठ बोलते हैं।'' स्वामी जी महाराज कहते हैं:

गुरु की करनी काहे धाओ, गुरु कहया सो कार कमाओ।

ये महान आत्माएं निर्दोष होती हैं, मुर्दे को जिन्दा कर सकती हैं। परमात्मा ने इन्हें बहुत ताकत बख्शी होती है; हम इनकी बराबरी कैसे कर सकते हैं?

गुरु गोबिंद सिंह जी हमारे मालवा के इलाके में आए। वहाँ एक सफेद गिद्ध बैठी हुई थी आपने उसे मार दिया। कुछ प्रेमियों ने सवाल किया कि महाराज जी! आपने इस निर्दोष को क्यों मार दिया? गुरु गोबिंद सिंह जी ने कहा, ''जाकर देखो कि इसकी एक आँख है। एक समय में यह राजा था। इसने हुकूमत के नशे में एक लड़की का सत भंग किया। उस लड़की ने कहा, ''तू गंद खाता है और गंद ही खाता रहे।'' आमतौर पर यह जानवर गंद खाकर ही खुश रहता है।

राजा ने डरकर उस लड़की से पूछा, ''मेरा उद्धार कैसे होगा?'' उस लड़की ने कहा, ''जब तू किसी पूरे सन्त–सतगुरु की निगाह में आएगा वही तेरा उद्धार कर सकता है।'' गुरु गोबिंद सिंह जी ने कहा कि आज यह मेरी निगाह में आया तो मैंने इसका उद्धार कर दिया। जब सेवकों ने जाकर देखा तो वाक्य में उसकी एक आँख थी।

***

धन्य अजायब

अहमदाबाद में 7, 8 व 9 जुलाई 2017 को नीचे लिखे पते पर सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है।

श्री देशी लोहाणा विद्यार्थी भवन,

फुटबाल ग्राउंड के सामने, (कांकरिया झील के पास)

अहमदाबाद - 380 008 (गुजरात)

फोन - 97 25 00 57 94, 96 38 75 20 20, 98 98 46 53 69

---

16 पी.एस. राजस्थान आश्रम में सतसंग का कार्यक्रम

4, 5 व 6 अगस्त 2017